JAGRAN CITY PAGE IV

...तब शिक्षकों का वेतन कम, समर्पण अधिक था

● प्रो. एमपी सिंह

मैंने वर्ष 1959 में लखनऊ विश्वविद्यालय में बीएससी में दाखिला लिया। उस वक्त विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या करीब चार-पांच हजार के बीच हुआ करती थी। ज्यादातर प्रोफेसर साइकिल से ही आया करते थे। हमारे जो शिक्षक थे, वो हम लोगों को फर्स्ट नेम (पहले नाम) से बुलाते थे। शिक्षक-छात्र संबंध भी स्वस्थ था। विज्ञान वर्ग में तो हम लोग अपनी क्लास के बाहर बहुत कम घूमते-फिरते थे।

मैं अपने शिक्षकों में वनस्पति विज्ञान विभाग के डॉ. राम उदार और भू-विज्ञान में डॉ. खड़क सिंह वल्दीया का नाम जरूर लेना चाहूंगा। इनको मैंने कभी नाराज होते नहीं देखा। मुझे याद है, एक दिन वनस्पति विज्ञान की कक्षा में डॉ. राम उदार पढ़ा रहे थे। क्लास में एक उदंड छात्र था। जैसे ही सर बोर्ड पर कुछ लिखने के लिए मुड़ते, वो आवाज करने लगता था। कई बार ऐसा हुआ तो सर बोले-प्लीज गो अहेड, आइ लाइक योर यूथ सिपरिट। 1968 में मैं शिक्षक के रूप में विश्वविद्यालय को अपनी सेवा देने लगा। उस दौरान मैंने भी अपने विद्यार्थियों से वही संबंध स्थापित करने का प्रयास किया, जैसा हमारे शिक्षकों ने हमसे किया था। स्तर गिरना वहां से शुरू हुआ, जब राजनीतिक पार्टियों ने विश्वविद्यालय के चुनाव में हस्तक्षेप करना आरंभ किया। विश्वविद्यालय में हर राजनीतिक पार्टी की स्टूडेंट विंग सक्रिय होने लगी और वहीं से हिंसा ने परिसर में कदम रखा। इसी दौरान पीएसी का विरोध भी हुआ और यूनिवर्सिटी में छात्रों ने आगजनी की। लखनऊ हाईकोर्ट ने स्वत: संज्ञान लेते हुए हस्तक्षेप किया और लिंगदोह कमेटी भी आई। 12-13 साल चुनाव नहीं हुए और व्यवस्था पटरी पर लौटी।

मैंने विद्यार्थी के तौर पर ये अनुभव किया कि उस समय अध्यापकों का वेतन यद्यपि कम था, पर उनका समर्पण बहुत अधिक था। अब शिक्षकों का वेतन बहुत बढ़ गया है, पर उनके समर्पण में कमी आई है। तीन साल प्राक्टर रहने के दौरान मेरा सबसे कटु अनुभव विश्वविद्यालय में राजनीतिक पार्टियों के दखल का ही रहा। विश्वविद्यालय में अध्ययन के साथ-साथ खेलकूद में भी लोग हिस्सा लेते थे। मैं स्वयं दो वर्ष तक विश्वविद्यालय की वालीबाल टीम का कप्तान रहा तथा उत्तर प्रदेश की टीम का प्रतिनिधित्व भी किया।

(लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति रहे हैं)

विद्यालय से विश्वविद्यालय तक

● ऋषि मिश्र

● लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले कई छात्र बाद में बने मुख्यमंत्री
● शुरू में छह-सात विभाग थे, अब लविवि में संचालित हो रहे 45 विषयों के पाठ्यक्रम

बरकतुल्लाह खान, रामकृष्ण हेगड़े, सुरजीत सिंह बरनाला और हितेश्वर सैकिया। ये सब 1950 के दशक में लखनऊ विश्वविद्यालय में विधि की पढ़ाई इसलिए करने आए थे, क्योंकि देश में वे अकेला ऐसा उच्च संस्थान था, जहां से दो साल में एलएलबी और एमए का पाठ्यक्रम एक साथ किया जा सकता था। ये सभी बाद में अलग-अलग राज्यों के मुख्यमंत्री भी बने। पूर्व केंद्रीय मंत्री एनकेपी साल्वे भी यहीं से एलएलबी कर के निकले। बाद में बड़े नेता और क्रिकेट प्रशासक के रूप में अपनी पहचान बनाई।

लविवि का विद्यालय से विश्वविद्यालय बनने तक का सफर स्वर्णिम रहा है। 1800 के आखिरी दशक में यह एक स्कूल के रूप में शुरू हुआ। बाद में यह विद्यालय कैनिंग कॉलेज में बदला। 1920 में कैनिंग कॉलेज जब लखनऊ विश्वविद्यालय के अस्तित्व में आया तब राजा महमूदाबाद की इस भूमि पर उच्च शिक्षा के इस बड़े केंद्र का आगाज हो चुका था। शुरुआत में छह-सात विभाग होते थे, जिनमें भाषा के उच्च ज्ञान को प्राथमिकता दी गई थी। हिंदी, संस्कृत, फारसी में इनमें मुख्य विषय थे। धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते आज के विश्वविद्यालय में विभागों की संख्या 45 हो चुकी है।

जेडब्ल्यू चक्रवर्ती, डॉ. बीरबल साहनी, डॉ. एनके सिद्धांत, डॉ. डीपी मुखर्जी, डॉ. जीएस थापर, डॉ. राधाकमल और डॉ. राधकुमुद मुखर्जी, केएएस अय्यर, वीएस राम, प्रो. एईएन सिंह, प्रो. केएस वल्दिया, प्रो. आरयू सिंह जैसे नामों ने लविवि को शिखर पर पहुंचाया, मगर 1980 से 2005 का काल लखनऊ विश्वविद्यालय के लिए संक्रमण का समय रहा। इस अवधि में छात्र राजनीति में सियासी दलों का पूरा प्रभाव हो गया था। लखनऊ विश्वविद्यालय की राजनीति मुख्यमंत्री आवास से संचालित की जाने लगी थी। परिणाम यह हुआ कि इन 25 सालों में अपने सुनहरे अतीत को विश्वविद्यालय ने खोया, मगर धीरे-धीरे बदलाव हुए। अब एक बार फिर से सुधार हो रहा है। परिसर बदल रहा है।

इन पाठ्यक्रमों से निकले कई मुख्यमंत्री

1960 के दशक के शुरुआती वर्षों में विधि की पढ़ाई करने का लगाव राजनीतिज्ञों में कम हो गया। लविवि एल्युमिनाई एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष प्रो. एमपी सिंह बताते हैं कि पुराने वक्त में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री बरकतुल्लाह खान, कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री सुरजीत सिंह बरनाला और असम के मुख्यमंत्री रहे हितेश्वर सैकिया ने भी लखनऊ विश्वविद्यालय से लॉ की पढ़ाई की। उस समय सुबह सात बजे से विधि की कक्षाएं लगा करती थी, और दोपहर में एमए की। इसलिए दोनों पाठ्यक्रमों में आसानी से उपस्थिति भी हो जाया करती थी। एमए और एलएलबी एक साथ होना उन दिनों गर्व का विषय था। जो लोग राजनीति में आना चाहते थे, उनके लिए राजनीति शास्त्र से परास्नातक और विधि का ज्ञान लाभदायक होता था। इसलिए वे पूरा देश छोड़कर लखनऊ की ओर दौड़े चले आते थे। जिससे उनके दो साल की बचत हो जाती थी और वे दोनों कोर्स भी कर लेते थे।

— अंतरराष्ट्रीय फलक पर चमके सितारे —

लविवि की ड्योढ़ी का दीया दुनिया में फैला रहा उजाला

● राष्ट्रीय विधि विवि जबलपुर के कुलपति प्रो. बलराज चौहान ने 1977 में लविवि से किया था विधि में परास्नातक
● 1978 में लविवि में ही नियुक्त हो गए थे लेक्चरर, बाद में राजधानी के राष्ट्रीय विधि विवि में भी बने कुलपति

आप जहां पढ़ते हैं, वहां से आपका आत्मिक लगाव हो जाता है। यदि आपको वहीं अपने भविष्य को गढ़ने और संवारने का मौका मिल जाए तो फिर क्या कहना। ऐसा मौका कुछ विरले लोगों को ही मिलता है। उन लोगों में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति प्रो. बलराज चौहान भी आते हैं। वे लविवि की ड्योढ़ी का ऐसा दीया हैं, जो देश-दुनिया में ज्ञान का उजाला फैला रहे हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय से 1977 विधि में परास्नातक करने के बाद वह 1978 में वहीं लेक्चरर हो गए। हमेशा नया करने की उनकी सोच का नतीजा रहा कि कुछ समय में ही वह प्रोफेसर बन गए। वह बताते हैं कि उनकी पढ़ाई में तो सभी शिक्षकों का योगदान रहा, लेकिन प्रो. पीके द्विवेदी और प्रो. केएस शुक्ला के दिए ज्ञान को वह कभी नहीं भूलते। 2006 राष्ट्रीय विधि विवि भोपाल के कुलपति के रूप में तैनात हुए प्रो. चौहान का कार्यकाल पूरा होता, इससे पहले ही अपनी योग्यता के बल पर वह राजधानी के राष्ट्रीय विधि विवि के पहले कुलपति के रूप में 2008 में तैनात हो गए।

2005 में महाधिवक्ता वीरेंद्र भाटिया के साथ राजधानी में राष्ट्रीय विधि विवि की स्थापना में अहम भूमिका निभाने वाले प्रो. चौहान ने अपने तरीके से विश्वविद्यालय को संवारा और देश के पहले 10 संस्थानों में इसे खड़ा कर दिया। विवि में ऐसे पुस्तकालय की स्थापना की, जहां देश-विदेश की कानून की किताबें और शोध मौजूद हैं। अपनी तरह का प्रदेश ही नहीं, यह देश का इकलौता पुस्तकालय है, जहां संविधान से लेकर राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय कानून की किताबें मौजूद हैं। पहली बार में उन्हीं के कार्यकाल में डॉ. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विवि में जेलरों को प्रशिक्षण दिया गया। बंदी जीवन पर विवि के सहायक कुलसचिव डॉ. मृदुल श्रीवास्तव ने उन्हीं की प्रेरणा से कई पुस्तकें लिखीं। मूट कोर्ट के साथ ही लॉ क्लीनिक खोलने पर पूरे देश में उनकी चर्चा हुई। लखनऊ विवि के शताब्दी समारोह में होनहार पूर्व छात्र व प्रोफेसर को भी आमंत्रित किया गया है।

HT PAGE 3

{ CENTENARY YEAR CELEBRATIONS }

Lucknow University braces for the big day

Over a hundred students have started preparations for the grand event planned to reflect 100 years of the university's existence

HT Correspondent
lkoreportersdesk@htlive.com

LUCKNOW : Students, alumni and members of the organising committee are bracing up for Lucknow University's upcoming weeklong centennial celebrations that get underway on November 19.

Over a hundred students have started preparations for the grand event planned to reflect 100 years of the university's existence.

President Ram Nath Kovind, Prime Minister Narendra Modi, defence minister Rajnath Singh, Governor Anandiben Patel and chief minister Yogi Adityanath are among the dignitaries invited for the celebrations. A plethora of events, including street/stage plays, song and dance performances, will be presented during the event. To take stock of the preparations, vice-chancellor Alok Rai visited Kailash hostel where these students have been rehearsing for the event.

"It was exciting to see these students working so hard. I am confident that their hard work will pay off and we will be able to put up an excellent event," he said. According to the plan, students will present the events as per the theme of each of the seven-day-long celebrations.

"The students will recite Saraswati Vandana and Kulgeet of the university during the inaugural event. They have prepared a play written by Premchand and Gulzar. A musical band of students will also perform," said Prof Rakesh Chandra, who is overseeing the preparations and assisting the students.

"One of the special attractions will be a medley of dances from Bengal, Assam, Rajasthan, Uttarakhand and Gujarat which the studnets will perform on the occasion," he added. Besides the centennial celebrations, the LU administration has also planned to hold the convocation ceremony on November 21.

Students preparing for cultural events to be staged during the weeklong centennial celebrations that get underway on November 19, at Kailash Hostel of Lucknow University. DHEERAJ DHAWAN /HT

TOI PAGE 1 & 16

This 100-year-old LU invite invoked 'new era'

Mohita.Tewari@timesgroup.com

Lucknow: The year was 1921 and the occasion a momentous one. The famed Munshi Naval Kishore Press was busy printing a special invite in royal style.

A scroll in A3 size, the invite was for the foundation laying ceremony of Lucknow University sent out by Lieutenant-Governor of the United Provinces of Agra and Oudh, Sir Spencer Harcourt Butler.

With a long message was a line written in bold 'Exegi monumentum aere perennius' in Latin. It meant 'a monument that I have raised more enduring than bronze'. The quote can be easily located at the historic Bennett Hall (now Malaviya Hall) of the varsity. This invite was sent to loyal taluqdars, zamindars and people from the royal families to invite them for the ceremony.

A special invite for LU's foundation laying ceremony in 1921

One such family is of author Atif Hanif, nearly 30km from Lucknow University in Saidanpur, Barabanki, which has still kept the invite safely.

▶LU is beginning, P 16

LU beginning of a new era of education, the invite said

▶Continued from P 1

'A century later, as Lucknow University designs its centenary celebration invite, TOI takes you back 100 years to that special invite.

"My grandfather Sheikh Muhammad Hanif, who was a sub-registrar in the stamp and registration department, had a hobby of preserving special invites. One such was the invite of the foundation laying ceremony of LU that he preserved as a young boy. We have kept the historical invite as we know how prestigious it is," said Hanif, who himself is penning a book on 100 years of Aligarh Muslim University.

The message on the invite, he says, is something that will make anyone proud. Running in over 1,000 words, it says, "LU is the beginning of the new era of education...In the new order of things, not only will examinations not play so important a part but this new university will approximate more closely to the type of universities that flourished in the heyday of the Hindu and Muslim cultures."

Such a beautiful message should be preserved forever, said Hanif.

The invite further says, "These universities strove to form real centres of learning and schools of thought in which the physical, intellectual, moral and emotional nature of man found the most congenial environment for growth and expansion. We hope that the University of Lucknow will not be a machine for grinding graduates out of the millstones of examination but a living and beneficent institution ministering to the highest and most vital wants of the nation."

Lav Bhargava, the great-great-grandson of Munshi Naval Kishore, the owner of the press, said, "The layout of the historical invite was the quintessential style of Naval Kishore Press. It had beautiful borders on all pages. The bond of LU and Asia's oldest publishing house established in 1858 is precious."

Now, for the centenary event invite, a committee has been formed to finalise the design and layout.

AMRIT VICHAR PAGE 3

एलयू में नये छात्रों का हुआ स्वागत

अमृत विचार लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो आलोक कुमार राय और कई अन्य प्रशासनिक अधिकारियों और विभागाध्यक्षों ने रविवार को छात्रों के लाभ के लिए आयोजित उनके इस श्रृंखला के अंतिम ओरिएंटेशन कार्यक्रम में विधि संकाय के नए स्नातक छात्रों का स्वागत किया। डीन, स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. पूनम टंडन ने छात्रों को अपने संबोधन के साथ ओरिएंटेशन की शुरुआत की। उन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ सांस्कृतिक, खेल और सह-पाठयक्रम गतिविधियों में सक्रिय विश्वविद्यालय के जीवन में भाग लेकर छात्रों को उनके समग्र विकास के लिए काम करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। उन्होंने नए छात्रों को उनके सीनियर और एलएलएम टॉपर वर्तिका द्विवेदी को विश्वविद्यालय के मेधावी छात्र परिषद में शामिल करने के बारे में सूचना दी, और सभी को प्रोत्साहित किया कि वे भी आगे चलके इस मेधावी परिषद में प्रतिनिधित्व करने के लिए कठोर मेहनत करें। प्रो. टंडन ने कहा कि फैकल्टी ऑफ लॉ का एक शानदार अतीत और शानदार वर्तमान है, और उन्हे पूरा भरोसा है कि नए छात्र इसका एक सुंदर भविष्य भी सुनिश्चित करेंगे।

प्रो टंडन के बाद डॉ राजीव राठी और प्रो बी डी सिंह, विधि संकाय के वरिष्ठ आचार्यों ने छात्रों को संबोधित किया। डॉ राठी, जो छात्र कल्याण के अतिरिक्त डीन भी हैं, ने उन पूर्व छात्रों के बारे में बताया जो देश भर मे विभिन्न उच्च पदो पर आसीन है। उन्होंने छात्रों को देश के सबसे पहले प्रतिष्ठित विधि संकाय के सदस्य बनने के लिए बधाई दी।

कुलपति ने भी किया मार्गदर्शन

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने छात्रों को संबोधित किया। प्रो राय ने सबसे प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों में से कुछ की बात की, जिसमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ शंकर दयाल शर्मा, केरल के महामहिम राज्यपाल और हमारे देश के विभिन्न उच्च न्यायालयों के 40 से अधिक माननीय न्यायाधीश शामिल हैं। उन्होंने छात्रों को उनके अच्छे स्वास्थ्य और उनकी बौद्धिक क्षमता के लिए, उनके माता-पिता, उनके शिक्षकों के और शुभचिंतकों के लिए आभारी होने के लिए कहा, जो उन्हें जीवन भर मार्गदर्शन करते रहे हैं। प्रो. राय ने अपने जीवन में सकारात्मकता के महत्व पर बल दिया, और छात्रों को न केवल उनके दृष्टिकोण बल्कि उनके कार्यों में भी सकारात्मक रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

NBT PAGE 6

एलयू: 21 से 24 तक कंफर्म करें अपना दाखिला

■ एनबीटी, लखनऊ : यूपीएसईई के तहत एलयू की एमबीए, बीटेक और एमसीए में दाखिला लेने वाले अभ्यर्थियों को 21 से 24 नवंबर तक अपना दाखिला कंफर्म करवाना होगा। अभ्यर्थियों को इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंस, लखनऊ यूनिवर्सिटी सेकंड कैम्पस में रिपोर्ट करना होगा।

अलॉटमेंट लेटर, एडमिट कार्ड, हाईस्कूल, इंटरमीडिएट और ग्रैजुएशन की मार्कशीट, कैटिगरी सर्टिफिकेट, सब कैटिगरी सर्टिफिकेट, काउंसलिंग के दौरान जमा फीस की रसीद, चार पासपोर्ट साइज फोटो के साथ-साथ एलयू के फाइनेंस ऑफिसर के फेवर में डिमांड ड्राफ्ट जैसे दस्तावेज लाने होंगे। अधिक जानकारी के लिए 9335911393, 9455925500 पर संपर्क कर सकते हैं।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

विधि संकाय में विद्यार्थियों का स्वागत

लखनऊ। लविवि में रविवार को विधि संकाय के विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने छात्रों से कहा कि इंडिया टुडे रैंकिंग के अनुसार लविवि विधि के अध्ययन का 10वां सबसे लोकप्रिय संस्थान है। उन्होंने छात्रों को उनके अच्छे स्वास्थ्य व बौद्धिक क्षमता के लिए माता-पिता और शिक्षकों का आभारी होने के लिए कहा। डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. पूनम टंडन ने छात्रों से कहा कि पढ़ाई के साथ सांस्कृतिक, खेल और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में शामिल होना जरूरी है।